

संरक्षण पहलों और वन्यजीव संरक्षण के पोषण में पर्यटन की भूमिका

डा॰ तुलसी दास बंजारे^{1*}

¹ सहायक प्राध्यापक महाराष्ट्र इंस्टीट्यूट ऑफ हायर एजुकेशन, जबलपुर

संदर्भ

भारत एक ऐसा देश है जहाँ समृद्ध ऐतिहासिक विरासत और अद्भुत प्राकृतिक जैव विविधता का संगम देखने को मिलता है। एक ओर भव्य महल, किले और ऐतिहासिक स्मारक हैं, तो दूसरी ओर घने जंगल, लुप्तप्राय वन्यजीव और अद्वितीय पारिस्थितिकी तंत्र हैं। इन दोनों ही अमूल्य संपत्तियों के संरक्षण के लिए लगातार प्रयासों और संसाधनों की आवश्यकता होती है। यह शोध पत्र इसी संदर्भ में पर्यटन की महत्वपूर्ण और बहुआयामी भूमिका का विश्लेषण करता है। यह तर्क देता है कि पर्यटन, यदि इसे सही ढंग से प्रबंधित और संचालित किया जाए, तो यह इन दोनों क्षेत्रों के लिए एक शक्तिशाली वित्तीय इंजन और जागरूकता का माध्यम बन सकता है।

यह पत्र महलों और वन्यजीवों के संरक्षण के लिए पर्यटन द्वारा उत्पन्न होने वाले आर्थिक लाभ, सामुदायिक जुड़ाव, और जागरूकता जैसे सकारात्मक प्रभावों का मूल्यांकन करता है। साथ ही, यह अनियंत्रित पर्यटन से उत्पन्न होने वाली चुनौतियों, जैसे पर्यावरणीय क्षति, सांस्कृतिक क्षरण, और वन्यजीवों के लिए खतरे, पर भी प्रकाश डालता है। विभिन्न सफल और असफल केस स्टडीज का विश्लेषण करते हुए, यह शोध पत्र स्थायी पर्यटन (नेजंपदंडिसम ज्वनतपेउ) के सिद्धांतों पर आधारित एक प्रभावी

डा॰ तुलसी दास बंजारे

मॉडल का प्रस्ताव करता है। निष्कर्ष में, यह कहा गया है कि विवेकपूर्ण और जिम्मेदार पर्यटन ही भारत की विरासत और वन्यजीवों के भविष्य को सुरक्षित कर सकता है, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि यह पीढ़ियों तक संरक्षित रहे।

मुख्य शब्द: पर्यटन, संरक्षण, महल, वन्यजीव, स्थायी पर्यटन, इकोटूरिज्म, सामुदायिक भागीदारी, भारत, विरासत।

1 प्रस्तावना

भारत का इतिहास सहस्राब्दियों पुराना है, और इसकी सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत दुनिया में बेजोड़ है। यहाँ हर कोने में प्राचीन किले, राजसी महल और पुरातात्विक स्थल मौजूद हैं, जो बीते युगों की कहानियाँ सुनाते हैं। वहीं, देश के विशाल भू-भाग पर फैले जंगल, पहाड़ और नदियाँ एक अद्वितीय वन्यजीव भंडार को आश्रय देते हैं, जिसमें बाघ, हाथी, शेर, और सैकड़ों अन्य प्रजातियाँ शामिल हैं। ये दोनों ही भारत की पहचान के अभिन्न अंग हैं और इनके संरक्षण की जिम्मेदारी हम सभी की है।

परंतु, इन अमूल्य धरोहरों के संरक्षण की राह चुनौतियों से भरी है। ऐतिहासिक स्थलों को मरम्मत और रखरखाव की निरंतर आवश्यकता होती है, जिसके लिए भारी धन की जरूरत होती है। इसी तरह, वन्यजीवों के आवासों को अतिक्रमण, प्रदूषण, और मानव-वन्यजीव संघर्ष से बचाने के लिए भी संसाधनों की कमी एक बड़ी बाधा है। ऐसे में, पर्यटन एक दोधारी तलवार के रूप में सामने आता है। एक ओर, यह संरक्षण के लिए आवश्यक धन और समर्थन का स्रोत बन सकता है, वहीं दूसरी ओर, यदि इसे ठीक से नियंत्रित न किया जाए तो यह इन धरोहरों के लिए एक बड़ा खतरा भी बन सकता है।

यह शोध पत्र इसी जटिल संबंध को समझने का प्रयास करता है। इसका उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि पर्यटन किस प्रकार भारत के महलों और वन्यजीवों के संरक्षण में एक सकारात्मक भूमिका निभा सकता है, इसमें कौन सी चुनौतियाँ हैं, और एक स्थायी भविष्य के लिए हमें किस दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। हम विस्तार से यह देखेंगे कि पर्यटन किस प्रकार इन दोनों क्षेत्रों के लिए एक पोषणकर्ता की भूमिका निभा सकता है।

संरक्षण की आवश्यकता और वर्तमान स्थिति

भारत अपनी सांस्कृतिक और प्राकृतिक दोनों ही विरासतों के लिए जाना जाता है। इन विरासतों की वर्तमान स्थिति को समझना, पर्यटन की भूमिका को बेहतर ढंग से समझने के लिए आवश्यक है।

ऐतिहासिक विरासत की स्थिति

भारत में 3,695 से अधिक केंद्रीय संरक्षित स्मारक और 7000 से अधिक राज्य-संरक्षित स्मारक हैं। इनमें से कई अपनी भव्यता खो रहे हैं।

अवसंरचनात्मक क्षरण: सदियों पुरानी इन इमारतों पर मौसम, प्रदूषण, और मानवीय लापरवाही का नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। कई संरचनात्मक रूप से कमजोर हो चुकी हैं।

वित्तीय कमी: भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (Iएप) और राज्य पुरातत्व विभागों के पास इन सभी स्मारकों के रखरखाव के लिए पर्याप्त बजट नहीं है।

अतिक्रमणरू कई ऐतिहासिक स्थल अतिक्रमण और अवैध निर्माण का शिकार हो रहे हैं, जिससे उनकी मूल पहचान और महत्व खतरे में है।

वन्यजीव और प्राकृतिक विरासत की स्थिति

भारत में 100 से अधिक राष्ट्रीय उद्यान और 500 से अधिक वन्यजीव अभयारण्य हैं, जो देश के 22% से अधिक भौगोलिक क्षेत्र को कवर करते हैं।

आवास का नुकसान: बढ़ती जनसंख्या, शहरीकरण, और औद्योगिक विकास के कारण वन्यजीवों के प्राकृतिक आवास सिकुड़ रहे हैं।

मानव-वन्यजीव संघर्ष: जब जानवर भोजन और पानी की तलाश में मानव बस्तियों में प्रवेश करते हैं, तो अक्सर संघर्ष होता है, जिससे दोनों पक्षों को नुकसान होता है।

अवैध शिकार (Poaching): बाघ, हाथी, गैंडा जैसे जानवरों का अवैध शिकार उनके अंगों की तस्करी के लिए आज भी एक बड़ी चुनौती है।

ये चुनौतियाँ स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं कि भारत को अपनी विरासत और वन्यजीवों के संरक्षण के लिए नए और स्थायी समाधानों की आवश्यकता है। पर्यटन ऐसा ही एक समाधान प्रस्तुत करता है।

महलों और ऐतिहासिक स्थलों के संरक्षण में पर्यटन की भूमिका

पर्यटन, विशेष रूप से सांस्कृतिक और विरासत पर्यटन, महलों और किलों के संरक्षण को कई महत्वपूर्ण तरीकों से पोषित करता है।

डा॰ तुलसी दास बंजारे

आर्थिक पोषण और वित्तीय स्थिरता

संरक्षण के लिए धन सबसे महत्वपूर्ण कारक है, और पर्यटन इसे उत्पन्न करने का सबसे प्रभावी तरीका है।

टिकटों और शुल्क से आय: पर्यटकों से प्रवेश शुल्क के रूप में प्राप्त होने वाला राजस्व सीधे महल के रखरखाव, मरम्मत और सुरक्षा पर खर्च किया जा सकता है। यह धन सरकार और निजी ट्रस्टों के लिए एक आत्मनिर्भर मॉडल प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, राजस्थान के मेहरानगढ़ किला ट्रस्ट ने पर्यटन से प्राप्त आय का उपयोग किले को बहाल करने और एक विश्व स्तरीय संग्रहालय बनाने के लिए किया है।

वाणिज्यिक उपयोग: कई महलों को होटल, रेस्तरां, या इवेंट स्थलों में बदल दिया गया है, जिससे वे अपनी ऐतिहासिक वास्तुकला को बरकरार रखते हुए आय उत्पन्न करते हैं। यह मॉडल विशेष रूप से निजी तौर पर प्रबंधित महलों में सफल रहा है, जहाँ मालिक अपनी संपत्ति को संरक्षित करने के लिए प्रेरित होते हैं।

स्थानीय अर्थव्यवस्था का विकास: पर्यटन स्थानीय समुदायों के लिए रोजगार के अवसर पैदा करता है। गाइड, कारीगर, दुकानदार और होटल व्यवसायी सभी पर्यटन पर निर्भर होते हैं। जब स्थानीय लोग आर्थिक रूप से पर्यटन से लाभान्वित होते हैं, तो वे महल को एक मूल्यवान संपत्ति के रूप में देखते हैं और उसके संरक्षण में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।

जागरूकता और सांस्कृतिक महत्व का पोषण

पर्यटन केवल वित्तीय लाभ ही नहीं देता, बल्कि महलों के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व को भी उजागर करता है।

शैक्षणिक अनुभव: पर्यटक महल जाकर न केवल इतिहास के बारे में सीखते हैं, बल्कि उस समय की कला, संस्कृति और जीवनशैली को भी समझते हैं। यह अनुभव उन्हें इन धरोहरों का सम्मान करने के लिए प्रेरित करता है।

विश्वव्यापी मान्यता: जब कोई महल बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करता है, तो उसे अंतरराष्ट्रीय मान्यता मिलती है। यह मान्यता सरकारों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों का ध्यान खींचती है, जिससे संरक्षण

के लिए अतिरिक्त धन और विशेषज्ञता प्राप्त करने में मदद मिलती है। यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों का दर्जा भी पर्यटन के कारण ही संभव हो पाता है।

वन्यजीव संरक्षण में पर्यटन की भूमिका

वन्यजीव पर्यटन, जिसे अक्सर इकोटूरिज्म के रूप में जाना जाता है, इन प्राकृतिक आवासों के संरक्षण में एक महत्वपूर्ण उपकरण बन गया है।

इकोटूरिज्म और प्रत्यक्ष फंडिंग

इकोटूरिज्म जिम्मेदार पर्यटन को बढ़ावा देता है, जिसका उद्देश्य प्राकृतिक क्षेत्रों का संरक्षण करना और स्थानीय समुदायों के कल्याण को सुनिश्चित करना है।

राष्ट्रीय उद्यान शुल्क: राष्ट्रीय उद्यानों में प्रवेश शुल्क, सफारी शुल्क और अन्य गतिविधियों से प्राप्त होने वाला राजस्व सीधे वन्यजीव संरक्षण और प्रबंधन पर खर्च होता है। इस धन का उपयोग वन रक्षकों के वेतन, एंटी-पोचिंग (अवैध शिकार विरोधी) गश्त, आवास के रखरखाव और वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए किया जाता है। भारत में प्रोजेक्ट टाइगर जैसे सफल अभियानों में पर्यटन से प्राप्त धन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

समुदाय-आधारित इकोटूरिज्म: कई वन क्षेत्रों के पास के गाँव सामुदायिक इकोटूरिज्म मॉडल चला रहे हैं, जहाँ स्थानीय लोग पर्यटकों के लिए गाइड, होमस्टे और अन्य सेवाएँ प्रदान करते हैं। इससे उन्हें वन्यजीवों और उनके आवासों को संरक्षित करने के लिए एक आर्थिक प्रोत्साहन मिलता है।

मानव-वन्यजीव संघर्ष को कम करना

वन्यजीवों के आवासों के पास रहने वाले समुदायों के लिए संघर्ष एक बड़ी समस्या है।

आर्थिक निर्भरता: जब स्थानीय समुदाय वन्यजीव पर्यटन से आय अर्जित करते हैं, तो वे वन्यजीवों को एक शसंसाधन के रूप में देखना शुरू करते हैं, जिसे संरक्षित करने की आवश्यकता है। यह दृष्टिकोण संघर्ष को कम करने और सह-अस्तित्व को बढ़ावा देने में मदद करता है।

जागरूकता कार्यक्रम: पर्यटन वन्यजीव संरक्षण के महत्व के बारे में स्थानीय लोगों को शिक्षित करने का अवसर प्रदान करता है, जिससे वे संरक्षण प्रयासों में भागीदार बन सकें।

डा॰ तुलसी दास बंजारे

निगरानी और शैक्षिक मूल्य

प्रहरी की भूमिका: राष्ट्रीय उद्यानों में पर्यटकों और गाइडों की निरंतर उपस्थिति अवैध शिकारियों को दूर रखने में मदद करती है। जितनी अधिक निगरानी होती है, उतनी ही सुरक्षा बढ़ती है।

शैक्षणिक मूल्य: वन्यजीव पर्यटन लोगों को प्रकृति और वन्यजीवों के बारे में शिक्षित करने का एक शक्तिशाली माध्यम है। एक पर्यटक जो जंगल में बाघ को देखता है, वह उसके संरक्षण का आजीवन समर्थक बन जाता है।

चुनौतियाँ और जोखिम

संरक्षण के लिए पर्यटन की सकारात्मक भूमिका के बावजूद, इसके कुछ महत्वपूर्ण जोखिम और चुनौतियाँ भी हैं जिन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

पर्यावरणीय और सांस्कृतिक क्षति

भीड़भाड़ (Over-tourism): अत्यधिक संख्या में पर्यटकों के आने से महल की संरचना को नुकसान हो सकता है। लगातार चलने-फिरने से फर्श और दीवारों का क्षरण होता है।

अनियंत्रित विकास: वन्यजीव क्षेत्रों के पास अनियोजित होटल और रिसॉर्ट का निर्माण आवासों को नष्ट करता है और जानवरों के लिए खतरा पैदा करता है।

प्रदूषण: पर्यटकों द्वारा छोड़ा गया कचरा, विशेषकर प्लास्टिक, वन्यजीवों और उनके आवासों के लिए गंभीर खतरा है।

असंतुलित विकास और लाभ का असमान वितरण

- पर्यटन से होने वाला लाभ अक्सर कुछ बड़े कॉर्पोरेट समूहों या रिसॉर्ट मालिकों तक ही सीमित रह जाता है।
- स्थानीय समुदायों को बहुत कम हिस्सा मिलता है, जिससे उनमें संरक्षण के प्रति उदासीनता बढ़ सकती है।

नैतिक मुद्दे

- कुछ पर्यटन प्रथाएँ, जैसे जानवरों को प्रदर्शन के लिए मजबूर करना, वन्यजीवों के कल्याण के लिए हानिकारक होती हैं।
- वन्यजीवों को देखने की होड़ में पर्यटक अक्सर नियमों का उल्लंघन करते हैं, जिससे जानवरों पर तनाव बढ़ता है।

स्थायी पर्यटन: समाधान की राह

इन चुनौतियों का समाधान स्थायी पर्यटन (सुनेजंपदंडसम ज्वनतपेउ) के सिद्धांतों को अपनाने में निहित है। स्थायी पर्यटन का लक्ष्य पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव को कम करना, स्थानीय संस्कृति का सम्मान करना, और आर्थिक लाभ को समुदाय के बीच समान रूप से वितरित करना है।

- **नीति और विनियमन:** सरकार को पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों की संख्या को नियंत्रित करने के लिए सख्त नीतियाँ बनानी चाहिए। राष्ट्रीय उद्यानों में श्वहनीय क्षमताश् (बंततलपदह बंचंबपजल) का निर्धारण कर एक दिन में प्रवेश करने वाले वाहनों और पर्यटकों की संख्या को सीमित किया जाना चाहिए।
- **सामुदायिक भागीदारी:** पर्यटन का लाभ स्थानीय समुदायों तक पहुँचे, यह सुनिश्चित करने के लिए सामुदायिक-आधारित पर्यटन मॉडल को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उन्हें प्रशिक्षित करके गाइड, कारीगर, और होमस्टे संचालक बनाया जा सकता है।
- **प्रौद्योगिकी का उपयोग:** भीड़भाड़ को प्रबंधित करने, सुरक्षा निगरानी करने, और कचरा प्रबंधन में सुधार के लिए स्मार्ट तकनीक (जैसे सेंसर और डेटा विश्लेषण) का उपयोग किया जा सकता है।
- **पर्यटक शिक्षा:** पर्यटकों को अपने व्यवहार के प्रति जिम्मेदार बनाने के लिए जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए, जिसमें शकचरा न फैलाएँश् और शजानवरों से दूरी बनाए रखेंश् जैसे संदेश शामिल हों।
- **निजी-सरकारी भागीदारी:** बड़े संरक्षण और पर्यटन परियोजनाओं के लिए सरकार और निजी क्षेत्र को मिलकर काम करना चाहिए, जिससे संसाधनों और विशेषज्ञता का प्रभावी उपयोग हो सके।

निष्कर्ष

पर्यटन, यदि सही ढंग से नियोजित और क्रियान्वित किया जाए, तो भारत के महलों और वन्यजीवों के संरक्षण में एक महत्वपूर्ण और सकारात्मक भूमिका निभा सकता है। यह आर्थिक स्थिरता प्रदान करता

डा॰ तुलसी दास बंजारे

है, जागरूकता बढ़ाता है, और स्थानीय समुदायों को संरक्षण प्रयासों में शामिल करता है। हालांकि, अनियंत्रित पर्यटन के जोखिमों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

यह शोध पत्र यह निष्कर्ष निकालता है कि भारत को एक ऐसी पर्यटन नीति की आवश्यकता है जो आर्थिक विकास और संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित करे। स्थायी पर्यटन के सिद्धांतों को अपनाकर और प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि हमारी ऐतिहासिक और प्राकृतिक विरासत न केवल संरक्षित रहे, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक प्रेरणा का स्रोत भी बनी रहे। यह केवल अतीत को सुरक्षित करने के बारे में नहीं है, बल्कि एक ऐसे भविष्य का निर्माण करने के बारे में है जहाँ प्रकृति और संस्कृति का सह-अस्तित्व हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- [1] भारत सरकार, पर्यटन मंत्रालय। (2020). राष्ट्रीय पर्यटन नीति 2020.
- [2] कुमार, रवि. (2018). भारत में वन्यजीव पर्यटनरू एक स्थायी दृष्टिकोण. दिल्ली: ज्ञान प्रकाशन.
- [3] भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (।ैप). (2022). वार्षिक रिपोर्टरू संरक्षित स्मारकों की स्थिति.
- [4] पटेल, आर.के. (2021). षड्कोटूरिज्म और सामुदायिक सशक्तिकरणरू भारतीय राष्ट्रीय उद्यानों का एक अध्ययन. ष् जर्नल ऑफ सस्टेनेबल टूरिज्म, 15(2), 45-60.
- [5] सिंग, अंजलि. (2019). विरासत पर्यटन और संरक्षण: राजस्थान के महलों का एक विश्लेषण. जयपुररू राजस्थान हेरिटेज फाउंडेशन.
- [6] भारत सरकार, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय। (2021). भारत में बाघ संरक्षण की स्थिति रिपोर्ट.
- [7] गांधी, प्रिया. (2020). ष्पर्यटन के माध्यम से सांस्कृतिक विरासत का वित्तीय पोषण. ष् इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कल्चरल हेरिटेज स्टडीज, 8(4), 112-125ं